- संदर्भ - सूची -

1- डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 11

2- सच्चिदानन्द धूमकेतु : माटी की महक, पृष्ठ 158

3- शिव प्रसाद सिंह : अलग अलग वैतरणी , पृष्ठ 29

4- राम दरश मिश्र : पानी के प्राचीर , पृष्ठ 300

5- शिव प्रसाद सिंह : अलग अलग वैतरणी, पृष्ठ 338-39

6- सुदर्शन मजीठिया : लोहे की लाशें , पृष्ठ 6

7- मन्नू भण्डारी : महाभोज, पृष्ठ 53

8- हिमांशु जोशी : समय साक्षी है , पृष्ठ 7

9- हिमांशु श्रीवास्तव : रिहर्सल , पृष्ठ 77

10- हिमांशु श्रीवास्तव : रिहर्सल, पृष्ठ 77

11- सुरेश सिन्हा : पत्थरों का शहर, पृष्ठ 191

12- ,, ,, ,, ,, 21

13- ,, ,, ,, ,, 170

14- ,, ,, ,, ,, 183

15- सच्चिदानंद धूमकेतु : माटी कीमहक, पृष्ठ 101

16- सुरेश सिन्हा : पत्थरों का शहर ,पृष्ठ 178

17- भगवती चरण वर्मा : प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 479

18- सुरेश सिन्हा : हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ 143

19- डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 19

20- रामदरश मिश्र : सूखता हुआ तालाब, पृष्ठ 67

21- ,, ,, ,, पृष्ठ 67

22- शिव प्रसाद सिंह : अलग अलग वैतरणी, पृष्ठ 77

23- विश्म्भर नाथ उपाध्याय : रीछ ,पृष्ठ 46

24- हिमांशु जोशी : नदी फिर बह चली, पृष्ठ 292

25- शिव प्रसाद सिंह : अलग अलग वैतरणी , पृष्ठ 5

26- भगवती चरण वर्मा - प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 376

27- भगवती चरण वर्मा : प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 376
28- विश्म्भरनाथ उपाध्याय : रीछ , पृष्ठ 337
29- ,, ,, ,, ,, 343
30- डा0 ओमकार नाथ श्रीवास्तव :हिन्दी साहित्य परिवर्तन के सौ वर्ष ,प्रथम संस्करण 1969,पृष्ठ 8
31- करूणा पति त्रिपाठी,:आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियां,पृष्ठ 98
32- डॉ0 हेमेन्द्र पानेरी :स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास :मूल्य संक्रमण,पृष्ठ 13
33- भगवती प्रसाद : प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 209
34- डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 14
35- उपरिवत , पृष्ठ 14
36- भगवती चरण वर्मा = प्रश्न और मरीचिका, पृष्ठ 237
37- उपरिवद् , पृष्ठ 31
38- अमृत लाल नागर : अमृत और विष, पृष्ठ 518
39- सुरेश सिन्हा : पत्थरों का शहर पृष्ठ 31
40- ,, ,, ,, पृष्ठ 35
41- ,, ,, ,, पृष्ठ 144
42- ,, ,, ,, पृष्ठ 131
43- मन्नू भण्डारी : महाभोज, पृष्ठ 154
44- विश्म्भरनाथ उपाध्याय : रीछ , पृष्ठ 677
45- सच्चिदानंद धूमकेतु : माटी की महक, पृष्ठ 159
46- राम दरश मिश्र : जल टूटता हुआ पृष्ठ 105
47- भगवती चरण वर्मा : सबहिं नचावत राम गोसाईं, पृष्ठ 43
48- शिव प्रसाद सिंह : अलग अलग वैतरणी, पृष्ठ 72
49- राम दरश मिश्र : सूखता हुआ तालाब , पृष्ठ 87
50- ,, ,, उपरिवद् पृष्ठ 87
51- हिमांशु जोशी : समय साक्षी है , पृष्ठ 7
52- श्री लाल शुक्ल : राग दरबारी, पृष्ठ 190

-::-

"उपसंहार"

"जीवन-मूल्यों" से सम्बद्ध विश्लेषण से हम इस निष्कर्षात्मक बिन्दुओं पर पहुँचते हैं कि जीवन मूल्य , किसी देश, विशेष या समाज-विशेष की संस्कृति के महत्त्वपूर्ण पक्ष होते हैं । इनको हम मानव धर्म एवं जीवन-दर्शन का मापदण्ड मान सकते हैं । दर्शन जिन्दगी का दृष्टिकोण निर्मित करता है, जो संकल्प और व्यवहार को प्रेरित करता है । अतः मानवीय संकल्प और व्यवहार दोनों मिलकर युगगत नये दृष्टिकोणों की सृष्टि करते हैं एवं ये नवीन दृष्टिकोण ही नये जीवन-मूल्यों को बनाते हैं । यद्यपि जीवन-मूल्यों का मौलिक रूप परिवर्तित नहीं होता है , तथापि युगीन परिवर्तित परिस्थितियों के साथ-साथ जीवन-मूल्यों के प्रति नये दृष्टिगोण निर्मित होते रह ते हैं । इनका परिवर्तित रूप ही विकसित स्वरूप कहा जा सकता है ।

वस्तुतः जीवन-मूल्यों को एक निश्चित सीमा एवं धारणा में निबद्ध नहीं किया जा सकता है । इतना अवश्य है कि इनको समुचित रूप से समझने के लिए आदर्श, प्रतिमान, संकल्प, मूल्यानुभूति आदि के परिप्रेक्ष्य में लक्ष्य किया जा सकता है । ये सभी तत्व जीवन-मूल्यों के निर्माण में सहायक होते हैं । इसके अतिरिक्त आदर्श और सद्-असद् मानदण्ड भी मूल्यों को उदभूत करते हैं और ये मूल्य अपनी युगानुरूप परिस्थितियों से उद्भूत होकर युगगत परिस्थितियों को प्रभावित करते रहते हैं । इसीलिए कहा जा सकता है कि जीवन-मूल्य बदलती हुई परिस्थितियों के कारण साथ साथ गतिशील होते रहते हैं ।

जीवन-मूल्यों को अनुशीलन व्यक्तिगत, आध्यात्मिक, समाजगत और राजनीतिक मूल्यों के आधार करने का प्रयास किया गया है और इनको सामाजिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक आदि दृष्टिकोणों की कसौटी पर कसा गया है । कहा जा सकता है कि पूर्ववर्ती काल के परम्परागत प्राप्त जीवन-मूल्यों में इतना परिवर्तन या गतिशीता दृष्टिगोचर नहीं होती है ,

जितनी समकालीन परिवेश में । यही कारण है कि पूर्ववर्ती युग के समाज में व्यक्तिगत मूल्य संकुचित सीमाओं से परे सामाजिक दायरों में विकसित होते और समाज को विकासशील बनाते । व्यक्ति स्वातंत्र्य, ईमानदारी, भालाई, अच्छाई, सौन्दर्य, चेतना, मनोरंजनात्मक, सेवाभाव, त्याग,शिष्टाचार, अहिंसा, आदर्श, कामादि मूल्य सुषुप्त अवस्था में विद्यमान थे, किन्तु आज शिक्षा, विज्ञान, बौद्धिकता,शहरीकरण, औद्योगीकरण, पाश्चात्यीकरण राजनीति आदि के परिवेश में मूल्य व्यवहारिक भाव भूमि पर जाग्रत हो रहे हैं । सन् 1960 ई0 तक आते आते, स्थिति यह हो गयी कि भारतीय जन जीवन में व्यक्तिगत मूल्य प्रमुख तथा समाजगत मूल्य गौण सिद्ध होने लगे । व्यक्ति चेतना के कारण भारतीय आध्यात्मिक , धार्मिक एवं भौतिक मूल्य भी प्रभावित हुए बिना न रह सके । पूर्ववर्ती युग की ईश्वर पूजा, धर्म, पाप-पुण्य, स्वर्गनरक, पवित्रता, शील, ईमानदारी, दया, करूणा आदि मान्यताएं इनके कारण टूटने लगी । इनके साथ साथ सामाजिक ,धार्मिक एवं रीति-रिवाजों, परम्प-राओं, धारणाओं व संस्कारों के प्रति अनास्था भी, व्यक्ति चेतना व शिक्षा आदि के कारण उत्पन्न होने लगी ।

इस जीवन-मूल्य संक्रान्ति काल में समाज सेवा भाव, समाज के लिए त्याग, मानवता, आपसी संबंध व मूल्य, परिवार जातिगत बंधन, कुल मर्यादा मातृ-पितृ व वात्सल भाव, आदर आज्ञा पालन आदि अस्तित्वहीन- से प्रतीत होते रहे हैं । इस प्रकार यह कहा जाय कि व्यक्तिगत मूल्यों के प्रभुत्व के कारण ही भारतीय सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्तिक, आर्थिक ,राजनीतिक और नैतिक मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं, तो यह कहना न्यायोचित ही होगा क्योंकि जीवन-मूल्य प्रत्येक युग की विशिष्टताओं के साथ साथ ही नया कलेवर धारण करते रहते हैं ।

"मूल्य" जीवन का मानदण्ड है, जो व्यक्ति के जीवन को परखता है । इसलिए मानव-मूल्यों को व्यक्ति विशेष की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, अभि-रूचियों तथा संकल्पों ने प्रभावित किया । स्वतंत्र भारत की राजनीति ने व्यक्तिगत मूल्यों को और अधिक प्रभावित किया । इसने ही "वोट-प्रणाली"

के माध्यम से व्यक्ति का मूल्य बढ़ाया, उसको प्रधानता दी, उसे देश की नागरिकता प्रदान कर, राजनीति का प्रमुख अंग बनाया । पिछड़े वर्गों या हरिजन वर्गों में जागरूकता आई और उनके उत्थान के लिए समानता एवं आरक्षण के नियम बनाकर, समानाधिकार एवं सुख सुविधाएं प्रदान कीं किन्तु सरकार की एकांगी नीति से देश में आये दिन वर्ग भेद को लेकर आन्दोलनों का प्रारम्भ हो गया । निम्न वर्ग तथा अछूत वर्ग उच्च वर्ग के समकक्ष आना चाहता है और इस वर्ग संघर्ष से नये विकसित हुए राजनीतिज्ञ इस वर्ग भेद तथा जातीयता की भावनाओं से लाभान्वित हो रहे हैं और निजी स्वार्थ पूर्ति के लिए दल गठन करते हैं । इस वर्ग विद्रोह तथा दल बदल नीति का विस्तार तीव्र गति से हो रहा है । जिसके प्रभाव से न तो शहर ही वंचित हैं और न गाँव । ग्राम्य जन-जीवन में जागृति आने लगी । परिणामत: उनके परम्परागत जीवन-मूल्य परिवर्तित होने लगे । यह उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्ती राजनीति आदर्श एवं लक्ष्य पूर्ण तथा स्वार्थहीन थी, जबकि समकालीन राजनीति का न तो कोई आदर्श है और न उसका कोई लक्ष्य है । इतना कहना समीचीन होगा कि इसके फलस्वरूप ही व्यक्ति में नयी भाव क्रान्ति व चेतना आई और परम्परागत नैतिक प्रतिमानों को अस्वीकार किया जाने लगा । साठोत्तर युग के संक्रमणशील समाज में राजनीति इतने गहरे रूप से प्रवेश कर गयी है कि व्यक्ति के समक्ष न कोई आदर्श शेष रह गया है और न नैतिक प्रतिमान । यही कारण है कि आज की राजनीति समाजगत नहीं बल्कि व्यक्ति प्रधान हो गयी है । इसीलिए इसमें समाज का हित व कल्याण न होकर आत्महित को श्रेय दिया जा रहा है ।

अत: आज की राजनीति देश का हित व कल्याण कम रही है और देश में बेकारी, भ्रष्टाचार, नये, नये षड्यंत्र ,भाई भतीजावाद ,भाषावाद, दलबंदी की दल-दल में फँसी, साम्प्रदायिकता, जातीयता व वर्ग भेद को अधिक बढ़ा दे रही है । समकालीन नेता झूठे नारों और वायदों की दुहाई देकर कुर्सी से चिपक रहा है । इस प्रकार समकालीन युग की राजनीति अपने आदर्शों, दायित्वों, लक्ष्यों आदि से च्युत होती जा रही है । अत: युगगत भ्रष्ट राजनीति ने भी हमारे परम्परागत आचारों, विचारों, संस्कारों, मान्यताओं, जीवन-मूल्यों, जीवनादर्शों आदि को गतिशीलता प्रदान की ।

यह उल्लेखनीय है कि समाज सुधारकों ने सांस्कृतिक और सामाजिक पुनर्जागरण करके, सर्वधर्म, समन्वय की भावना की स्थापना पर बल दिया। साथ ही हिन्दू समाज की कुरीत्तियां, कुप्रथाओं एवं रूढियों को दूर दिया और पाश्चात्य के स्वस्थ एवं स्वच्छ विचारों को ग्रहण करते हुए भारतीय परम्परागत मूल्यों - मानवता, मैत्री ,सहयोग, जातीय एकता, दया, अहिंसा, शान्ति ,बंधुत्व आदि को भारतीय जन जीवन के समक्ष प्रस्तुत किया। इन्होंने समाज से विधवा विवाह, तलाक, अन्तर्जातीय विवाह आदि का समर्थन एवं सती प्रथा, बाल विवाह और बहु विवाह प्रथा पर रोक लगाकर,भारतीय परम्पराओं की नींव को हिला दिया। किन्तु उक्त तथ्य पूर्ववर्ती युग में प्राय: - व्यवहार में नहीं परिलक्षित हुए, तथापित इन्हें कानूनी मान्यता मिल गई थी। साठोत्तर युग के पश्चात् शनै: शनै: इन्हें व्यवहार में अपनाये जाने लगा और आज स्थिति यह है कि हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक ,राजनीतिक जीवन-मूल्यों के साथ साथ परम्पराओं व धारणाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन आने लगा है। पूर्वयुगीन सत्य ,ईमानदारी,प्रेम, दया, करूणा, अहिंसा, सदाचार, वात्सल्य, दायित्व,आज्ञापालन, आदर्श, व्यवहार, विचार ,मर्यादा, राजनीतिक मूल्य आदि मूल्य औद्योगीकरण , नगरीकरण , विज्ञान, शिक्षा पाश्चात्य प्रभाव, फैशनपरस्ती एवं भ्रष्ट राजनीति के कारण टूटने लगे हैं। समकालीन युद्धों ने भारतीय नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया। व्यक्ति मन में निराशा, कुंठा, उत्पीड़न, अजनबीपन आदि दुर्बल प्रवृत्तियों की सृष्टि हुई। परिणामत: व्यक्तिगत मूल्य सीमित दायरों में सिमटने लगे, और सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्य भी इसकी लपेट में आये बिना नहीं रह सके। टूटता हुआ संयुक्त परिवार , बिखरता हुआ दाम्पत्य जीवन, माता-पिता व संतान के प्रति अवहेलना, रिश्ते संबंधों में मन-मुटाव ,पति पत्नी के टूटते संबंध आदि। अनेक अनाचार आज के युग की विशेषताएं बनने लगी हैं। वैयक्तिक चेतना और बौद्धिक प्रभाव, नारी स्वातंत्र्य व व्यक्ति समानता के भाव, ने निर्मुक्त काम-वृत्ति भ्रष्टाचार, स्वतंत्रता बनाम स्वच्छन्दता आदि प्रवृत्तियों को तीव्रतर

किया । जिसका प्रभाव हमारे नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक ,धार्मिक एवं राजनीतिक, मानदण्डों, प्रतिमानों आदि पर पड़ा । प्राचीन परम्पराओं मान्यताओं, धारणाओं का जीर्ण-शीर्ण ढांचा चरमरा उठा । फिर भी इतना अवश्य है कि समकालीन युग में व्यक्तिगत मूल्य व्यक्तिवाद की संकीर्ण परिधि में सिमट गये हैं और आध्यात्मिक धार्मिक एवं नैतिक मूल्य अस्तित्व हीन प्रतीत होने लगे, जबकि सामाजिक मूल्य आंशिक परिवर्तन लिए हुए, किसी न किसी रूप में अवशेष हैं । वस्तुत: सामाजिक मूल्यों का अस्तित्व आज भी समाज में बना हुआ है । युगीन परिवेश में भी माता-पिता के प्रति आदर भाव,वात्सल्य स्थायी दाम्पत्य जीवन, विवाह, पुत्र कामना, नजर उतारना, संस्कार आदि का मूल्य युगीन समाज में विद्यमान हैं । इतना अवश्य है कि सामाजिक कुप्रथाओं कुरीतियों, रूढ़ियों, कुमान्यताओं से शनै: शनै: मुक्ति पा रहा है ।

आधुनिक भारतीय समाज में जहाँ एक ओर जातिगत बन्धन नष्ट हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर "वर्ग" व्यवस्था जन्म ले रही है । आज का समाज वर्ग संघर्ष की चक्की में पिस रहा है । समाज के उच्च-मध्यम-निम्न वर्गों में से विशेषत: मध्यम वर्ग ही आधुनिक जटिलताओं एवं विडम्बनाओं का शिकार बना हुआ है । विशेषत : मध्यम वर्ग का बौद्धिक वर्ग ही जीवन मूल्यों को कभी तोड़ता है , कभी जोड़ता है , वह दिखावटी, बनावटी की झूठी जिन्दगी जी रहा है । मानसिक कुण्ठाओं, तनावों, घुटनयुक्त, दिशाहीन, मूल्यहीन, वह अपनी परिस्थितियों से संघर्षरत है ।

जीवन-मूल्यों के टूटन में पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी के द्वंद्व की भूमिका प्रमुख है । इसी आधार पर तृतीय व चतुर्थ अध्याय में उपन्यासकारों की दो कोटियाँ निर्धारित की गईं । पुरानी पीढ़ी के उपन्यासकारों के पात्र दो प्रकार के हैं । प्रथमत: वे नई पीढ़ी के पात्र हैं, जो परम्परागत जीवन-मूल्यों, मर्यादाओं, भारतीय संस्कृति , आदर्शों को महत्व देते हैं । इनमें - नरेश मेहता के पात्र - सरस्वती, श्रीधर, त्रियम्बक, दुर्गा, शिवशंकर आचार्य, वसुन्धरा, हिमांशु श्रीवास्तव की - परबतिया ,

शानी का मोहन सिंह, गिरिधर गोपाल का - किशन आदि पात्र उल्लेखनीय हैं । ये पात्र - अच्छाई, सच्चाई, मानवता, दया, अहिंसा, करूणा, आदि नैतिक मूल्यों को स्वीकारते हैं । द्वितीय कोटि के नई पीढ़ी के वे उपन्यासकार हैं जिन्होंने नई व पुरानी पीढ़ी के जीवन-मूल्यों, परम्पराओं, आदर्शों के द्वंद्व को चित्रित किया है । नई पीढ़ी के उपन्यकारों ने यद्यपि प्राचीन मूल्यों को अस्वीकारत्मक दृष्टिकोण से चित्रित किया है, फिर भी कुछ नये उपन्यासकार ऐसे हैं, जो युवा पीढ़ी द्वारा प्राचीन जीवन-मूल्यों के प्रति आस्था अभिव्यक्त करते हैं ऐसे उपन्यासकारों में - सुरेश सिन्हा के - विवेक, इन्दित (पत्थरों का शहर), राजेन्द्र (सुबह अँधेरे पथ पर), उषा प्रियंवदा की राधिका (रूकोगी नहीं राधिका) दाम्पत्य सुरक्षा व स्थायित्व पति की आवश्यकता अनुभव करती है । कमलेश्वर की इरा (डाक बँगला) कृष्णा सोबती की रत्ती (सूरजमुखी अँधेरे के) भी अंत में पाश्चात्य करती हुई अनुभव करती है कि ऐसा कोई उसके जीवन में हो जिसका वह इन्तजार करे । मोहन राकेश के - श्यामा, एवं कुमार, (अन्तराल) शिव प्रसाद सिंह के - विपिन शशिकान्त (अलग अलग वैतरणी) राम दरश मिश्र का सतीश (जल टूटता हुआ) मालती जोशी की नीलम (सहचरणी) अनंत गोपाल शेवड़े का निरंजन ,आदि । ये सभी पात्र नई पीढ़ी के होते हुए भी अन्ततोगत्वा भारतीय परम्परागत जीवन-मूल्यों के प्रति आकर्षित होते हैं । कुछ नई पीढ़ी के पात्र ऐसे भी हैं जो अर्थ व काम के आधार पर - जीवन-मूल्यों को नकारते हैं । इनमें -मछली मरी हुइ (राजकमल), शीरी, प्रिया, निर्मल, पद्मावत, सफेद मेमने (मणि मधुकर), डा० जानवरों का डा०, पोस्टमास्टर, सन्दो, जस्सू , जल विच मीन प्यासी का मैं, आपका बंटी (मन्नू भण्डारी) के शकुन व अजय शिक्षा के कारण , राग दरबारी (श्री लाल शुक्ल) के रूप्पन, वैद्यजी, प्रिंसीपल, चिड़ियाघर (गिरिराज किशोर) की मिसिज रिज़वी,कच्ची पक्की दीवारे (रामकुमार भ्रमर) के चम्पा, रत्ना, आभा, कावेरी आदि प्रमुख हैं । इन उपन्यासों में मूल्यहीनता, दिशाहीनता, तनाव-घुटन, बोझिलता, मानसिक पीड़ा, आदि का अंकन है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपन्यासों में अंकित यद्यपि युवा पीढ़ी ही सर्वाधिक प्राचीन मूल्यों के प्रति आक्रोश एवं विद्रोह कर रही है, तथापि वह स्वस्थ व स्वच्छंद मूल्यों को ग्रहण भी कर रही है ।

समकालीन उपन्यासों में अंकित जीवन-मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में इतना कहा जा सकता है कि इस युग के उपन्यास अधिकतर व्यक्तिवादी दृष्टि-कोण को लेकर लिखे जा रहे हैं । इस व्यक्तिवादी संकीर्ण धारणा ने व्यक्तिगत जीवन-मूल्यों को संकीर्ण बनाया और इससे सामाजिक मूल्यों में संकट की स्थिति उत्पन्न हो गयी। "रूकोगी नहीं राधिका", कड़ियां, वे दिन, पचपन खम्भे, लाल दीवारें, बासी फूल, एक पति के नोट्स, मित्रो मरजानी, औरत एक : चेहरे हजार, एक प्यासा तालबा, बेधर, मछली मरी हुई, कष्णाकली, शून्य की बाहों में , सूरज मुखी अंधेरे के आदि उपन्यास व्यक्ति स्वातंत्र्य, आत्म सुख की प्राप्ति मुक्त काम भाव, परम्परागत संस्कारों व मर्यादाओं को तोड़ना आधुनिकता या फैशनपरस्ती, अस्तित्ववादी दृष्टिकोण की तीव्र भावना और तीव्र काम कुण्ठा ग्रस्त आधुनिक जीवन की ओर संकेत करते हैं । अन्तराल, अंधेरे बंद कमरे, दो एकान्त, चौदह फेरे, कांचघर, मुरदाघर, क्यों फंसे, इत्यादि उपन्यसासें में व्यक्ति चेतना इतनी तीव्र होती गयी है कि सामाजिक व्यक्तिगत धार्मिक, नैतिक मूल्य-मर्यादाएं टूटती गयी हैं । इनमें दाम्पत्य जीवन का कड़वा पन और अन्य अनेक विषमताओं का अंकन किया गया है । महाभोज, काली आंधी, तमस, अलग अलग वैतरणी, राग दरबारी, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब , प्रश्न और मरीचिका, आधा गांव आदि उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक जीवन-मूल्यों का विवेचन चित्रित है । राजनीति ने ग्राम जीवन को विशेष रूप से प्रभावित किया । इसने जहाँ एक ओर भारतीय जन-जीवन में जागृति प्रदान की, वहाँ दूसरी ओर व्यक्ति की प्रतिष्ठा, निम्न वर्ग का उत्थान एवं वर्ग विद्रोह के मूल्यों की स्थापना भी की । यही कारण है कि आज के उपन्यासों में प्राचीन जीवन मूल्यों के प्रति आस्था-अनास्था की खींचातानी मची हुई है । सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक तथा व्यक्तिगत जीवन-मूल्यों का हृास अर्थगत व काम गत आधार पर प्रमुखत: हुआ है ।

अत: युगगत जीवन-मूल्यों के विषय में इतना कहा जा सकता है कि "सबहिं नचावत राम गोसाईं" उपन्यास की धनवंत कुवर, "उत्तर कथा" की

दुर्गा नैतिक तथा सामाजिक जीवन-मूल्यों को स्वीकारती है तो "बीमार शहर" की आधुनिक नारियां गोरा बाला और शोभना आधुनिकता के मोह में विवाह हीन दाम्पत्य जीवन और विवाह हीन मातृ को निसंकोच स्वीकारती है । "एक चूहे की मौत" की सोनिया नैतिकता तथा कुल मर्यादा को हिम्मत के साथ अस्वीकारती है । अतः आधुनिक शिक्षित नारी सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को कहीं स्वीकारती हैं तो कहीं अमान्य सिद्ध करती हैं । युगीन भारतीय समाज में जीवन मूल्य विषम स्थिति में विद्यमान है ।

समसामयिक उपन्यासों में अंकित जीवन-मूल्य , मूल्य संक्रमण व द्वंद्वात्मक स्थिति से गुजर रहे हैं । ऐसी स्थिति में नैतिक व धार्मिक जीवन-मूल्यों का विघटन अधिक हुआ है । और युग सापेक्ष किंचित मात्र नये मूल्यों की स्थापना भी हुई है । नैतिकता के नये मानदण्ड तथा नये प्रतिमान भी बने हैं । इतना अवश्य है कि शिक्षा, विज्ञान, नगरीकरण, आवास की कमी एवं औद्योगीकरण के कारण व्यक्ति के समक्ष अस्तित्वबोध की जो समस्या आ खड़ी हो गयी है उसका चित्रण समकालीन उपन्यासकारों ने यथार्थतः किया है जबकि इस प्रकार के लेखक काम कुण्ठा ,व्यक्ति स्वातंत्र्य , नारी स्वातंत्र्य , परिवार विघटन की समस्या को ही लेकर चले हैं । परन्तु अमृत लाल नागर, रेणु, नरेश मेहता, सुरेश सिन्हा इत्यादि ऐसे लेखक भी हैं, जिन्होंने युगीन बदलती हुई परिस्थितियों में सामाजिक जीवन-मूल्यों का अंकन किया है । ऐसी विषम स्थिति में सामाजिक मूल्य परम्पराएं कहीं टूट रही हैं , तो कहीं जुड़ती जा रही है । ग्राम जीवन में अभी भी ये मूल्य अवशिष्ट हैं । धार्मिक, आध्यात्मिक ,नैतिक तथा राजनीतिक मूल्यों का सर्वथा पतन दृष्टिगोचर है ।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत मूल्य व्यक्तिवाद की संकुचित सीमा में निबद्ध हो रहे हैं । इनका समाज सापेक्ष रूप नष्ट हो रहा है और उसके स्थान पर समाज विरोधी तत्व उभर रहे हैं । आध्यात्मिक एवं धार्मिक मूल्यों के अन्तर्गत ईश्वर संबंधी मान्यताओं के स्थान पर "मानवता" व "लोकहित" संबंधी मूल्यों पर बल दिया जा रहा है । धर्माडम्बरों, धर्मगत

रूढ़ियों तथा नैतिक मूल्यों की मान्यताएं टूटती जा रही हैं । सामाजिक क्षेत्र में बंधन स्वरूप संकीर्ण मान्यताएं, जाति प्रथाएं, कुल मर्यादाएं , अपशकुन संबंधी धारणाएं, रीति नीतियों के प्रति आकर्षण ,शहरी वातावरण में अस्तित्वहीन हो रही हैं जबकि ग्राम जीवन में आज भी अवशेष हैं । समाजगत नये मूल्यों के अन्तर्गत, तलाक, नारी समानता, कम सन्तान, भावना, बड़ी आयु में विवाह करना आदि नये तत्वों का विकास हो रहा है । इस युग में राजनीतिक जीवन मूल्यों का ह्रास सर्वाधिक दृष्टिगोचर हो रहा है । नेता निजी स्वार्थपूर्ति में जनहित की उपेक्षा कर रहे हैं । फिर भी इससे निम्न वर्ग उत्थान, "वोट" (मतदान) ग्रामीण चेतना, नारी जागरूकता, वर्ग विद्रोह, आदि नये जीवन-मूल्यों का प्रदादुर्भाव हुआ ।

अन्त में यह दृष्टिगत किया जा सकता है कि अधुनातन समाज में मूल्य संक्रान्ति की स्थिति दृष्टिगोचर हो रही है , किन्तु फिर भी शाश्वत् स्वस्थ जीवन-मूल्य समाज का संतुलन बनाए हुए हैं । ये शाश्वत् मूल्य ही भविष्य में नए मूल्यों को जन्म देकर , समाज को गतिशीलता प्रदान करते रहेंगे । इसी आशा के साथ समसामयिक उपन्यासों में अंकित जीवन-मूल्यों के आरम्भ का समापन किया जा सकता है ।

-::-

List of Upanyas

शोध- प्रबंध में विवेचित उपन्यासों की सूची

संख्या	उपन्यास	उपन्यासकार	प्रकाशन	संस्करण	वर्ष
1-	अपने अपने अजनबी	अज्ञेय	राजकमल नई दिल्ली	प्रथम	1961
2-	मोती	चतुरसेन शास्त्री	,,	,,	1961
3-	हीरक जयंती	नागार्जुन		,,	,,
4-	दायरे	रांगेय राघव		,,	,,
5-	नदी फिर बह चली	हिमांशु श्रीवास्तव		,,	,,
6-	लौटे हुए मुसाफिर	कमलेश्वर		,,	,,
7-	सपना बिक गया	भगवती प्रसाद वाजपेयी		,,	,,
8-	टूटा व्यक्तित्व	मनहर चौहान		,,	,,
9-	अँधेरे बंद कमरे	मोहन राकेश		,,	,,
10-	नदी बहती थी	राजकमल चौधरी		,,	,,
11-	पानी की प्राचीर	रामदरश मिश्र	हिन्दी बुक सेंटर नई दिल्ली	,,	,,
12-	धरती मेरा घर	रांगेय राघव	,,	,,	,,
13-	पचपन खम्भे लाल दीवारें	उषा प्रियंवदा	,,	,,	,,
14-	हौलदार	शैलेश मटियानी	,,	,,	,,
15-	प्रश्न और मरीचिका	भगवती चरण वर्मा	,,	,,	1962
16-	सामर्थ्य और सीमा	भगवती चरण वर्मा	,,	,,	1962
17-	यह पथ बंधु था	नरेश मेहता	,,	,,	,,
18-	धूमकेतु :एक श्रुति	नरेश मेहता	,,	,,	,,
19-	दूखन लागे नैन	भगवती प्रसाद वाजपेयी	,,	,,	,,
20-	दो अध्याय	उदयशंकर भट्ट	,,	,,	,,
21-	आखिरी आवाज़	रांगेय राघव	,,	,,	,,
22-	डाक बंगला	कमलेश्वर	,,	,,	,,
23-	एक सड़क सत्तावन गलियां	,,	,,	,,	,,
24-	मंजिल से आगे	महावीर अधिकारी	,,	,,	,,

25-	ग्राम सेविका	अमरकांत	हिन्दी बुक सेंटर	प्रथम	1962
26-	ज़माना बदल गया	गुरूदत्त	,,	,,	,,
27-	चारू चन्द्र लेख	हज़ारी प्रसाद द्विवेदी	,,	,,	,,
28-	शहर में घूमता हुआ आइना	उपेन्द्र नाथ अश्क	,,	,,	1963
29-	उग्रतारा	नागार्जुन	,,	,,	1963
30-	टूटते बंधन	भगवती प्रसाद वाजपेयी	,,	,,	,,
31-	बारह घण्टे	यशपाल	,,	,,	,,
32-	अनदेखे अनजाने पुल	राजेन्द्र यादव	राजकमल	,,	,,
33-	एक और अजनबी	सुरेश सिन्हा	,,	,,	,,
34-	वे दिन	निर्मल वर्मा	,,	,,	1964
35-	टूटती इकाईयां	शरद देवड़ा	,,	,,	,,
36-	रेखा	भगवती चरण वर्मा	,,	,,	,,
37-	कालेज स्ट्रीट के नए मसीहा	शरद देवड़ा	,,	,,	,,
38-	दो एकान्त	नरेश मेहता	,,	,,	,,
39-	काला जल	शानी	,,	,,	1965
40-	चौदह फेरे	शिवानी	,,	,,	1965
41-	जुलूस	फणीश्वर नाथ रेणु	नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली	,,	,,
42-	अमृत और विष	अमृत लाल नागर	,,	,,	1966
43-	मछली मरी हुई	राजकमल चौधरी	,,	,,	,,
44-	शहर था शहर नहीं था	,,	,,	,,	,,
45-	आधा गांव	राही मासूम रज़ा	,,	,,	1966
46-	मृन वृन्दावन	लक्ष्मी नारायण लाल	,,	,,	,,
47-	चुंनर की पीड़ा	यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"	,,	,,	,,
48-	सुबह अंधेरे पथ पर	सुरेश सिन्हा	,,	,,	1967
49-	मंत्रबिद्ध	राजेन्द्र यादव	,,	,,	1967
50-	रूकोगी नहीं राधिका-	उषा प्रियंवदा	,,	,,	,,
51-	गुप्त धन	भगवती प्रसाद वाजपेयी	,,	,,	,,

क्रमांक	उपन्यास	उपन्यासकार	प्रकाशन	संस्करण	वर्ष
52-	बासी फूल	बलवंत सिंह	नेशनल पब्लिकेशन	प्रथम	1967
53-	एक पति के नोट्स	महेन्द्र भल्ला	,,	,,	,,
54-	मित्रो मरजानी	कृष्णा सोबती	,,	,,	,,
55-	औरत एक :चेहरे हज़ार	परदेशी	,,	,,	,,
56-	अलग अलग वैतरणी	शिव प्रसाद सिंह	,,	,,	,,
57-	रीछ	विश्म्भरनाथ उपाध्याय	,,	,,	1967
58-	राग दरबारी	श्री लाल शुक्ल	,,	,,	1968
59-	चिड़ियाघर	गिरिराज किशोर	,,	,,	,,
60-	अनंतर	जैनेन्द्र कुमार	,,	,,	1968
61-	क्यों फंसे	यशपाल	,,	,,	,,
62-	कुछ जिन्दगियां बेमतलब	ओम प्रकाश दीपक	,,	,,	,,
63-	इमरतिया	नागार्जुन	,,	,,	1968
64-	न आने वाला कल	मोहन राकेश	,,	,,	,,
65-	अमलतास	शशिप्रभा शास्त्री	,,	,,	,,
66-	एक प्यासा तालाब	श्याम व्यास	,,	,,	,,
67-	दूसरी बार	श्री कांति वर्मा	,,	,,	,,
68-	कन्दील और कुंहासें	गिरिधिर गोपाल	,,	,,	1969
69-	जंगल	अमृत राय	,,	,,	,,
70-	सुख -दुख	,,	,,	,,	,,
71-	भटियाली	,,	,,	,,	,,
72-	नाच्यौ बहुत गोपाल	अमृत लाल नागर	,,	,,	,,
73-	उत्तर कथा	नरेश मेहता	,,	,,	,,
74-	जल टूटता हुआ	राम दरश मिश्र	,,	,,	,,
75-	ऋतु चक्र	जोशी	,,	,,	,,
76-	एक नन्हीं किन्दील	,,	,,	,,	,,
77-	शून्य की बाहों में	शान्ति जोशी	हिन्दी बुक सेंटर	,,	,,
78-	टोपी शुक्ला	राही मासूम रज़ा	,,	,,	,,

क्रमांक	उपन्यास	उपन्यासकार	प्रकाशन	संस्करण	वर्ष
79-	लोहे की लाशें	सुदर्शन मजीठिया	हिन्दी बुक सेंटर	प्रथम	1969
80-	काले उजले दिन	अमर कान्त	,,	,,	,,
81-	पानी बहता, रमता जोगी	ओम प्रकाश निर्मल	,,	,,	,,
82-	माटी की महक	सच्चिदानंद धूमकेतु	,,	,,	,,
83-	गिरते हुए महल	गुरूदत्त	,,	,,	,,
84-	आपका बंटी	मन्नू भण्डारी	,,	,,	1970
85-	उसका घर	मेहरून्निसा परवेज़	,,	,,	1970
86-	सबहिं नचावत राम गोसाईं	भगवती चरण वर्मा	,,	,,	,,
87-	कड़ियां	भीष्म साहनी	,,	,,	,,
88-	उसका शहर	प्रमोद सिन्हा	,,	,,	,,
89-	कच्ची पक्की दीवारें	राम कुमार भ्रमर	,,	,,	,,
90-	पत्थरों का शहर	सुरेश सिन्हा	,,	,,	1971
91-	सफेद मेमने	मणि मधुकर	,,	,,	,,
92-	बेघर	ममता कालिया	,,	,,	1971
93-	जल बिन मीन पियासी	मिश्र	,,	,,	,,
94-	कोरा कागज़	अनंत गोपाल शेवड़े	,,	,,	,,
95-	कांच घर	राम कुमार भ्रमर	,,	,,	,,
96-	कटा हुआ आसमान	जगदम्बा प्रसाद दीक्षित	,,	,,	,,
97-	सूखा सैलाब	निर्मला वाजपेयी	,,	,,	,,
98-	यात्राएं	गिरिराज किशोर	,,	,,	,,
99-	जिन्दाबाद :मुरदाबाद	दयानंद वर्मा	,,	,,	,,
100-	आखिरी सफर	मनहर चौहान	,,	,,	,,
101-	एक चूहे की मौत	बदीउज्जमा	,,	,,	,,
102-	अन्तराल	मोहन राकेश	,,	,,	1972
103-	सूखता हुआ तालाब	राम दरश मिश्र	,,	,,	,,
104-	धरती धन न अपना	जगदीश चन्द्र	,,	,,	,,
105-	प्रेम अपवित्र नदी	लक्ष्मीनारायण लाल	,,	,,	,,

क्रमांक उपन्यास	उपन्यासकार	प्रकाशन	संस्करण	वर्ष
106- अपना मोर्चा	काशीनाथ सिंह	हिन्दी बुक सेंटर	प्रथम	1972
107- सूरजमुखी अँधेरे के	कृष्णा सोबती	,,	,,	,,
108- आदमी वैसाखी पर	यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र	,,	,,	1973
109- तमस	भीष्म साहनी	,,	,,	,,
110- दिल एक सादा कागज़	राही मासूम रज़ा	,,	,,	,,
111- सीमाएं टूटती हुई	श्री लाल शुक्ल	,,	,,	1973
112- बीमार शहर	राजेन्द्र अवस्थी	,,	,,	,,
113- काली आंधी	कमलेश्वर	,,	,,	1974
114- लाल टीन की छत	निर्मल वर्मा	,,	,,	,,
115- मुरदाघर	जगदम्बा प्रसाद दीक्षित	,,	,,	,,
116- अपने लोग	राम दरश मिश्र	,,	,,	1976
117- जहर का चांद	गंगा प्रसाद मिश्र	,,	,,	,,
118- समय साक्षी है	हिमांशु जोशी	,,	,,	1976
119- दूसरी तरफ	महेन्द्र भल्ला	,,	,,	1976
120- नाच्यौ बहुत गोपाल	अमृत लाल नागर	,,	,,	1978
121- छोटे छोटे महायुद्ध	रामकान्त	,,	,,	1978
122- कटरा की आरज़ू	राही मासूम रज़ा	,,	,,	,,
123- रिहर्सल	हिमांशु श्रीवास्तव	,,	,,	,,
124- किशनुली की ढाट	शिवानी	,,	,,	1979
125- युद्धबंदी	केसर अंसल	,,	,,	,,
126- महाभोज	मन्नू भण्डारी	,,	,,	,,
127- सहचारिणी	मालती जोशी	,,	,,	,,

 Hindi Book Content

हिन्दी के आलोचनात्मक ग्रन्थ - (ख)

1- डॉ० मदन गोपाल गुप्त : मध्यकालीन काव्य में भारतीय संस्कृति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, (प्र० 1968)

2- डॉ० मदन गोपाल गुप्त : भारतीय व साहित्य और संस्कृति, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली

3- डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजकमल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली (प्र० 1973)

4- डा० कान्ति वर्मा : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, राजचन्द एण्ड कम्पनी, 1-अंसारी रोड, दिल्ली (प्र० 1966)

5- डॉ० रमेश चन्द्र लवानिया : हिन्दी कहानी में जीवन-मूल्य अमित प्रकाशन, गाजियाबाद (प्र० 1973)

6- डा० राम दरश मिश्र : आज का हिन्दी साहित्य संवेदना और दृष्टि अभिनव प्रकाशन - दिल्ली-6, (प्र० 1975)

7- डॉ० नगीना जैन :आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास अक्षर प्रकाश प्रा० लि० ,नई दिल्ली (प्र० 1976)

8- डा० ज्ञान चन्द गुप्त :स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना अभिनव प्रकाशन - दिल्ली-31, (प्र० 1974)

9- डॉ० इन्द्रनाथ मदान : हिन्दी उपन्यास पहचान और परख, लिपि प्रकाशन, दिल्ली (प्र० 1975)

10- डा० सुषमा नारायण : भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ति, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली-7 (प्र० 1966

11- डा० हेमेन्द्र पानेरी : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : मूल्य संक्रमण, संघी प्रकाशन, जयपुर (प्र० 1974)

12- डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : हिन्दी उपन्यास :उपलब्धियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली (प्र० 1970)

13- डा० ज्ञान चन्द गुप्त :आंचलिक उपन्यास:सम्वेदना और शिल्प, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली-7, (प्र० 1975)

14- डा0 हुकुमचन्द : आधुनिक काल में नवीन जीवन-मूल्य,
भारतीय संस्कृत भवन, जालंधर, (प्र0 1972)

15- डॉ0 पुरुषोत्तम दुबे : व्यक्ति चेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास
अनुपमा प्रकाशन - बम्बई (प्र0 1973)

16- चरण दास शास्त्री : तुलसी दास काव्य में नैतिक मूल्य,
भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली-6, (प्र0 1971)

17- डा0 रामनाथ शर्मा : अरविन्द का सर्वांग -दर्शन
अनु प्रकाशन, मेरठ, (प्र0 1965)

18- डा राधार शार्म : समीक्षा के नये संदर्भ (प्र0 1972)
प्रगति प्रकाशन , आगरा -3

19- डा0 पी॰ आदेश्वर राव : स्वच्छन्दतावादी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन
प्रगति प्रकाशन, आगरा-3, (प्र0 1974)

20- आचार्य उमेश शास्त्री : प्रसाद साहित्य में आदर्शवाद एवं नैतिक दर्शन
देवनागर प्रकाशन, जयपुर (प्र0 1974)

21- डॉ0 भोलानाथ : आधुनिक हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
प्रगति प्रकाशन, आगरा-3 (प्र0 1969)

22- डॉ0 सुधेश : आधुनिक हिन्दी और उर्दू काव्य की प्रवृत्तियां
अभिनव प्रकाशन (प्र0 1974)

23- डॉ0 बामन अहिरे : स्वा0 हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना : एक सर्वेक्षण
अप्रकाशित (1979)

24- डा0 कामेश्वर प्रसाद सिंह : प्रसाद की काव्य प्रवृत्ति
अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर (प्र0 1966)

25- डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना : प्रसाद दर्शन
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा (प्र0 1969)

26- डा0 राम गोपाल शर्मा "दिनेश": साहित्य के नये संदर्भ
प्रभात प्रकाशन-दिल्ली-6 (प्र0 1976)

27- जगदीश चन्द्र जैन : पाश्चात्य समीक्षा दर्शन,
हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी- - 1973

28- डा० संतोष कुमार तिवारी : छायावादी काल की प्रगतिशील चेतना
भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली-6 ‖ प्र०1970‖
29- डा० वीरेन्द्र सिंह : आयाम -
उपमा प्रकाशन, जयपुर ‖प्र० 1970‖
30- डा० प्रेम प्रकाश गौतम : "चिन्तन"
साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ‖प्र० 1973‖
31- डा० प्रेम प्रकाश रस्तोगी : छायावाद और वैदिक दर्शन,
आदर्श साहित्य प्रकाशन -दिल्ली ‖प्र० 1971‖
32- डा० कमलाप्रसाद पाण्डेय : छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक और
सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ,
रचना प्रकाशन, इलाहाबाद ‖प्र० 1972‖
33- डा० अम्बादत्त पाण्डेय :छायावादी काव्य में लोक मंगल की भावना,
प्रेम प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली-6 ‖प्र० 1973‖
34- डा० चलसानि सुब्बाराव :हिन्दी और तेलगु की स्वातंत्र्य पूर्व ऐतिहासिक
उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन
प्रगति प्रकाशन, आगरा-3 ‖प्र० 1970‖
35- डा० ओमकार नाथ श्रीवास्तव : हिन्दी साहित्य परिवर्तन के सौ वर्ष,
राजकमल प्रकाशन, प्र॰स० 1966‖
36- डा० महावीर दाधीच : आधुनिक और भारतीय परम्परा
शब्द लेखा प्रकाशन, बीकानेर प्र०स०‖1968‖
37- डा० कुमार विमल :अत्याधुनिक हिन्दी साहित्य,
ज्ञानपीठ पटना, ‖प्र० 1970‖
38- करूणापति त्रिपाठी : आधुनिकता हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियों
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय ‖1967‖
39- डा० हरदेव बाहरी : प्रसाद साहित्य कोश
40- वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत- हिन्दी कोश
41- सच्चिदानंद वात्सायन : हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य ‖1961‖

42- डा० दिनेश : स्वाधीनता कालीन हिन्दी कहानी में जीवन-मूल्य
43- डा० त्रिलोकीचन्द्र तुलसी : परिवेश मन और साहित्य
44- डा० दयाल शरण शर्मा : नीत्शे का मूल्य दर्शन परिषद् पत्रिका ॥अं० 1971॥
45- डा० ईश्वर चन्द शर्मा : पश्चमीय आचार-विचार का आलोचनात्मक अध्ययन
46- डा० देवराज : संस्कृति का दार्शनिक विवेचन ॥ 1956॥
47- गजानन माधव : मुक्तिबोध एक साहित्यिक की डायरी
48- बाबू गुलाब राय : साहित्य के मूल्य , साहित्य समीक्षा
49- डा० रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय,
उदयांचल ,पटना ॥1962॥
50- डा० चण्डी प्रसाद जोशी : हिन्दी उपन्यास : समाज शास्त्रीय विवेचन,
अनुसंधान प्रकाशन ॥ प्र० 1962॥
51- राम रतन भटनागर : निराला और नव जागरण
52- केसरी नारायण शुक्ल : आधुनिक काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत
53- डा० परशुराम शुक्ल विरही : आधुनिक हिन्दी काव्य में यथार्थवाद,
ग्रन्थम - कानपुर ,प्र स; ॥ 1966॥
54- डा० विश्वनाथ नरवणे : अनु० नेतिमचन्द्र जैन, आधुनिक भारतीय चिन्तन
55- गंगा प्रसाद विमल : प्रेम चन्द
राजकमल प्रकाशन ॥1965॥
56- डा० बलभद्र तिवारी : आधुनिक साहित्य : व्यक्तिवादी भूमिका
नन्दकिशोर एण्ड संस -वाराणसी , प्र०स०1962
57- डा० महाजन और डा० सेठी : भारत की संवैधानिक इतिहास
58- लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक :
59- डा० महेन्द्र चतुर्वेदी :हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्र०स० ॥1962॥
60- डा० राम गोपाल सिंह : आधुनिक हिन्दी उपन्यास
राजकमल प्रकाशन , प्र०स० ॥1968॥
61- डा० राम दरश मिश्र : हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा,
राजकमल प्रकाशन-दिल्ली, ॥प्र०स० 1968॥

62- डा0 इन्द्रनाथ मदान : आज हिन्दी उपन्यास,
राजकमल प्रकाशन-दिल्ली §प्र0स0 1966§
63- डा0 कुंवर सिंह : हिन्दी उपन्यास :सामाजिक चेतना,
पाण्डुलिपि प्रकाशन-दिल्ली-5 §प्र0 1978§
64- डा0 विमल सहस्त्र बुद्धे : हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण,
प्रस्तक संस्थान §कानपुर§ प्र0 19
65- यशपाल : गांवदी की शवयात्रा
66- इन्दिरा जोशी : हिन्दी उपन्यासों में लोक तत्व,विश्व उपन्यासों में लोक-
तत्व एवं भारतीय उपन्यासों में लोक तत्व,
सरस्वती प्रकाशन मन्दिर,इलाहाबाद §प्र. 1965§
67- प्रेम भटनागर : हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य,
अर्चना प्रकाशन - जयपुर §प्र0 1968§
68- व्रज भूषण सिंह आदर्श : हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन,
रचना प्रकाशन, इलाहाबाद §प्र0 1970§
69- शिक्षा सिद्धांत : एन0आर0 स्वरूप सक्सेना,
लायक बुक डिपो, मेरठ 1 § स0 1975§
70- कुमार विमल : मूल्य परिवर्तन :मानविकी के संदर्भ में आलोचना :
अक्तूबर,दिसम्बर §1967§
71- दायित्व और स्वातंत्र्य अविछिन्न मूल्य सम्पादकीय आलोचना,जनवरी §1956§
72- सुरेश सिन्हा : हिन्दी उपन्यास,
लोक-भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद ,प्र0स0§1972§

꠸ पत्र - पत्रिकाएँ ꠸ -ग -

1- आलोचना
2- समीक्षा लोक
3- हिन्दुस्तान साप्ताहिक
4- धर्मयुग
5- संचेतना
6- कल्पना
7- पूर्णिमा
8- विमर्श
9- सरस्वती
10- नवनीत
11- युगनिर्माण योजना
12- समर्पण , गुजराती
13- जन कल्याण, गुजराती
14- अखण्डानंद, गुजराती
15- इम्प्रिंट, अंग्रेज़ी
16- रीडर डाइजेस्ट, अंग्रेज़ी
17- मिरर , अंग्रेज़ी
18- इण्डिया टूडे , अंग्रेज़ी
19 रविवार (हिन्दी)
(20) अखण्डानंद (गुजराती)

-::-

ENGLISH BOOK CONTENTS

1. A R Desai : Social Background of India Nationalism Popular Prakashan Bombay 1969

2. A G Nurani : Minister's Misconduct

3. Bright man : Persons and values

4. B Russell : The scientific outlook

5. Dewey : Experience of nature

6. D S Sharma : Hindustan through the ages

7. D P Mukherjee : Modern India Culture

8. SK Maitra : The philosophy of Ravindranath

9. Dr MA Bush : The rise of Growth of Indian Nationalism

10. David Estan : The Political system. An enquiry into the state of political science

11. Dr DR Mankekar : Kamala Mankekar, Decline and fall of Indra Gandhi : 19 months of emergency (Orient Publication Delhi-1977)

12. Ed NK Bose : Selections from Gandhi

13. Ed B Singh : The Frontiers of Social Science

14. G E Moor : Ethics

15. G Lukacs : Study in European Realism

16. HM Bhattacharjee : The Principles of Philosophy

17. Henrry Prali : Fair Child & others Dictionary of sociology and related Sciences.

18. Jahan F Cuber : Sociology a Synopsis of Principles

19. JE Nicola : Normal and Abnormal Psychology

20. JD Sethi : India in Crises

21. Jay Prakash Narayan : The basic Problems of free India

22. K Marx : Capital

23. KM Pannickar : Hindu Society at Gross Road

24. L Fischer : The life of Mahatma Gandhi

25. Lassky and Marshall : Value and Existence

26. MN Shri Niwas : Social Changes in Modern India

27. -"- : Cast in Modern India

28. MK Gandhi : Towards Non-violent Socialism

29. Ferry and Webber : Hostory of Philosophy

30. PK Gopal Krishnan : Development of Economic Ideas in India

31. RC Dutta : Economic Hostory of India under British Rule

32. RK Mukharjee : The demensions of Values

33. RK Mukherjee : Economic Problems of Modern India

34. RK Mukherjee : The Social Structure of Values

35. RC Chatterjee : Ram Mohan Roy and Modern India

36. Raman Rolland : The Products of the New India

37. RS Perry : Contemporary Philosophy Problems.

38. S Freud : New Introductory lecture on Psychoanalysis

39. Shri Shivnath Shastri : History of Brama Samaj

40. V Ferm : An Encydopaedia of Religion

41. Dictionary thought - completed by Edwards

42. Dictionary by Pearl's Gem